यह एक गहरा और अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसका सही उत्तर पाने के लिए हमें दो बुनियादी सत्यों को समझना होगा:

1. परमेश्वर सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता है।
2. परमेश्वर पवित्र है; वह न पाप करता है और न ही पाप की रचना करता है।

आइए देखें कि ये दोनों सत्य एक साथ कैसे सत्य ठहरते हैं।

---

1. परमेश्वर ने सब कुछ रचा — परन्तु हर परिणाम को नहीं

हाँ, परमेश्वर ने सब कुछ रचा है:

> "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।"
> *(यूहन्ना 1:3)*

इसमें आकाश, पृथ्वी और समस्त जीव-जगत शामिल है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि परमेश्वर ने हर कार्य, हर निर्णय या हर आविष्कार को सीधे तौर पर बनाया हो—विशेषकर वे जो उसके स्वभाव के विरुद्ध हैं।

क्या परमेश्वर ने पाप को रचा, क्योंकि उसने सब कुछ रचा है?

इसे इस प्रकार समझिए:

परमेश्वर ने पेड़ बनाए, लेकिन फर्नीचर या काग़ज़ नहीं—ये मनुष्यों ने बनाए। परमेश्वर ने लोहा और खनिज बनाए, लेकिन वाहन या हथियार नहीं—ये मानव की रचनाएँ हैं।
परमेश्वर ने आटा, पानी और तेल दिया, लेकिन चपाती या पुलाव नहीं बनाए—इन्हें मनुष्य कच्ची वस्तुओं को मिलाकर बनाता है।

इसी प्रकार, परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा दी। मनुष्य इस स्वतंत्रता का उपयोग परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए भी कर सकता है, और उसके विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भी।
पाप उसी विद्रोह का परिणाम है। इसलिए पाप कोई वस्तु नहीं है जिसे परमेश्वर ने बनाया हो, बल्कि यह उस अच्छी चीज़ का विकृत रूप है जिसे परमेश्वर ने बनाया था।

2. पाप अच्छाई का मानवीय (और स्वर्गदूतों का) भ्रष्ट होना है

परमेश्वर ने मनुष्यों और स्वर्गदूतों को चुनने की स्वतंत्रता दी। इस स्वतंत्रता के बिना प्रेम, आज्ञाकारिता और संबंध का कोई अर्थ नहीं होता। लेकिन स्वतंत्रता के साथ अवज्ञा का जोखिम भी जुड़ा हुआ है।

शैतान कभी एक पवित्र स्वर्गदूत था, परन्तु उसने घमंड और विद्रोह को चुन लिया:

“जिस दिन से तू सृजा गया, उस दिन से तेरे चाल-चलन निर्दोष थे,
जब तक तुझ में कुटिलता न पाई गई।”
(यहेजकेल 28:15)

आदम और हव्वा को एक सिद्ध वाटिका में रखा गया था, फिर भी उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया:

“जिस दिन तू उसका फल खाएगा, उसी दिन अवश्य मर जाएगा।” (उत्पत्ति 2:17)

इस प्रकार पाप संसार में मनुष्य के चुनाव के द्वारा आया, न कि परमेश्वर की योजना के द्वारा।

“इस कारण जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में आया, और
पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इसी प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।”
(रोमियों 5:12)

3. परमेश्वर पाप की रचना नहीं कर सकता — क्योंकि वह पवित्र है

यह विचार कि परमेश्वर पाप को रच सकता है, उसके स्वभाव के पूरी तरह विपरीत है। बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है:

“परमेश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं।”
(1 यूहन्ना 1:5)

“तेरी आँखें इतनी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख नहीं सकता,
और तू अन्याय को सहन नहीं कर सकता।”
(हबक्कूक 1:13)

यदि परमेश्वर ने पाप को रचा होता, तो वह न पवित्र होता और न ही न्यायी। लेकिन पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि वह पूर्ण रूप से पवित्र है और पाप से घृणा करता है:

“क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर नहीं है जो दुष्टता से प्रसन्न
हो; दुष्ट तेरे साथ नहीं रह सकता।”

(भजन संहिता 5:4)

इसलिए उत्तर स्पष्ट है: नहीं, परमेश्वर ने पाप को नहीं रचा। उसने स्वतंत्र इच्छा दी, और मनुष्यों तथा गिरे हुए स्वर्गदूतों ने उसी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करके पाप को जन्म दिया।

4. पाप आज भी रचा जा रहा है

आज भी बुराई के नए-नए रूप सामने आ रहे हैं। प्रभु यीशु ने इसके विषय में पहले ही कहा था:

“और अधर्म के बढ़ जाने से बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा।” (मत्ती 24:12)

प्रेरित पौलुस भी यही सत्य बताता है:

“वे बुराई करने के उपाय निकालते हैं…”
(रोमियों 1:30)

इसी कारण संसार नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा है, और यदि मनुष्य पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर न लौटे, तो उसका न्याय निश्चित है।

5. पाप से छुटकारा केवल यीशु मसीह में है

कोई भी मनुष्य अपने बल से पाप पर विजय नहीं पा सकता। परन्तु परमेश्वर ने अपनी महान दया में अपने पुत्र के द्वारा उद्धार का मार्ग प्रदान किया:

“परमेश्वर हम पर अपने प्रेम को इस रीति से प्रकट करता है कि
जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा।”
(रोमियों 5:8)

उद्धार में शामिल है:

पापों से मन फिराना — (प्रेरितों के काम 3:19)
यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेना — (प्रेरितों के काम 2:38)
पवित्र आत्मा को प्राप्त करना, जो पवित्र जीवन जीने की सामर्थ देता है — (रोमियों 8:13–14)

यीशु मसीह में हम केवल क्षमा ही नहीं पाते, बल्कि बदले भी जाते

हैं, ताकि पाप की शक्ति से मुक्त होकर नया जीवन जी सकें।

“इसलिये यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी
बातें बीत गई हैं; देखो, सब कुछ नया हो गया है।”
(2 कुरिन्थियों 5:17)

6. पवित्रता के लिए परमेश्वर का बुलाहट

परमेश्वर अपने बच्चों से स्पष्ट अपेक्षा रखता है:

“इसलिये तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।”
(मत्ती 5:48)

इसका अर्थ पापरहित पूर्णता नहीं, बल्कि आत्मिक परिपक्वता, सत्यनिष्ठा और परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ जीवन है। हमें इस पापी संसार में उसकी पवित्रता को प्रतिबिंबित करना है।

परमेश्वर ने पाप को नहीं रचा।
पाप तब उत्पन्न हुआ जब सृजे हुए प्राणियों—स्वर्गदूतों और मनुष्यों—ने अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग किया।
परन्तु यीशु मसीह के द्वारा हम पाप की शक्ति और उसके दण्ड दोनों से मुक्त हो सकते हैं।

आइए हम पवित्रता को चुनें, आत्मा के अनुसार चलें, और अपने प्रभु के आगमन के लिए तैयार रहें।

प्रभु आ रहा है!

Share on:
WhatsApp

Print this post